IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छायावाद की प्रवृतिगत विशेषताएँ

Umashankar Ray.
M.A HINDI (UGC NET&JRF)

शोध सारः– हिन्दी काव्य जगत में सन् 1918 ई0 के लगभग परिवर्तनशीलता का एक नया रूप प्रकट हुआ जो निरंतर सन् 1936 ई0 के आस–पास तक चलता रहा इसे ही विद्वानों ने छायावाद नाम से अभिहित किया है। रीतिकालीन स्थूल ऐन्द्रियकता और द्विवेदीयुगीन इतिवृतात्मकता, शुष्क नैतिकता और बौद्धिकता के प्रतिक्रिया स्वरूप छायावाद का जन्म हुआ। सन् 1916 ई0 के आस–पास हिन्दी काव्य जगत में कल्पनापूर्ण, स्वच्छन्द एवं भावुकता की एक लहर उमड़ पड़ी। भाषा, भाव, शैली, छन्द, अलंकार इन सब दृष्टियों से पुरानी कविता से इसका कोई मेल नहीं था। आलोचकों ने इसे छायावाद या छायावादी कविता का नाम दिया। छायावादी युग खड़ी बोली काव्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। सन् 1920 ई0 तक हिन्दी में निःसन्देह छायावाद की संज्ञा प्रचलित हो चुकी थी। क्योकिं इसी वर्ष श्री शारदा पत्रिका में मुकुटधर पाण्डेय की 'हिन्दी में छायावाद' शीर्षक से चार निबंधों की एक लेखमाला प्रकाशित हुई थी। सन् 1921 ई0 में इसी शीर्षक से श्री सुशील कुमार का एक लेख सरस्वती पत्रिका में छपा था, जिसमें छायावादी कविता को टैगोर स्कूल की चित्रकला के समान अस्पष्ट बताया गया था। इस युग की हिन्दी कविता में वस्तु निरूपन के स्थान पर अनुभूति निरूपन को प्रधानता प्राप्त हुई थी।

मुख्य शब्दः– स्वच्छन्द, व्यक्तिनिष्ठ, स्वानुभूतिमयी, सौंदर्यानुभूति, दिवसावसान, स्थूल ऐन्द्रियता, मानवीकरण, नवसुरभित, उन्मादकता, चित्रात्मकता आदि।

.....

हिन्दी साहित्य में छायावाद का विकास द्विवेदीयुगीन कविता के उपरान्त हुआ। मोटे तौर पर छायावादी काव्य की समय सन् 1918 ई0 से 1936 ई0 तक मानी जा सकती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी छायावाद का प्रारंभ सन् 1918 ई0 से ही माना है, क्योकिं छायावाद की प्रमुख कवियों पन्त , प्रसाद, निराला ने अपनी रचनाएँ लगभग इसी वर्ष के आसपास लिखनी प्रारंभ की थी। सन् 1918 ई0 में प्रसाद का 'झरना' प्रकाशित हो चुका था तथा निराला की प्रसिद्ध कविता 'जूही की कली' सन् 1916 ई0 में प्रकाशित हुई थी। पन्त के 'पल्लव' की कुछ कविताएं सन् 1918 ई0 में प्रकाशित हुई थी । प्रसाद की कामायानी सन् 1935 ई0 में प्रकाशित हुई थी तथा प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना सन् 1936 ई0 में हुई। इन दोनो बातों को ध्यान में रखकर छायावाद की अंतिम समय सीमा 1936 ई0 हीं मानना समीचीन है।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदी युगीन काव्य की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ, क्योकिं द्विवेदीयुगीन कविता विषयनिष्ठ, वर्णनप्रधान और स्थूल थी। जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान एवं सूक्ष्म है।

छायावाद की परिभाषाएँः–

विभिन्न विद्वानों ने छायावाद को भिन्न भिन्न रूप में विश्लेषित व परिभाषित करने का प्रयास किया है। जिसमें छायावाद की कतिपय विशेषताएं परिलक्षित होती है। यहाँ कुछ विद्वानों के मतों का उल्लेख प्रासंगिक हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहां उसका संबंध कथावस्तु से होती है अर्थात जहाँ कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन मानकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दुसरा प्रयोग काव्य–शैली या पद्धिति विशेष के व्यापक अर्थ में है।

जयशंकर प्रसाद का कथन है–जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौर्दयमियता, प्रकृतिविधान तथा उपचार कक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषता है।

डॉ0 रामकुमार वर्मा का मत है–'जब परमात्मा की छाया आत्मा पर और आत्मा की छाया परमात्मा पर पड़ने लगता है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।

डॉ0 नागेन्द्र ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहते हुए लिखा है–"स्थूल शब्द बड़ा व्यापक है, उसकी परिधि में सभी प्रकार के बाह्य रूप–रंग रूढ़ियाँ आदि सन्निहित है और उसके प्रति विद्रोह का अर्थ है– उपयोगितावाद के प्रति भावुकता का विद्रोह, नैतिक रूढ़ियों के प्रति मानसिक स्वातंत्र का विद्रोह और काव्य के बंधनों के प्रति मानसिक स्वच्छन्द कल्पना का विद्रोह।''

अचार्य नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों के दृष्टि में–"मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदय में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार में छायावाद की एक सर्वमान्य परिभाषा हो सकती है।''

उपर्युक्त विद्वानों के मतों के आलोक में हम छायावाद की विशषताओं को दो रूपों में ग्रहण कर सकते हैं– भावगत एवं कलागत।

छायावाद की भावगत विशेषताओं का विवेचन निम्नांकित शीर्षकों के अंदर किया जा सकता हैः–

स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोहः–पूर्व छायावाद अर्थात द्विवेदीयुगीन कविता उपयोगितावाद, यर्थाथवाद और शुष्क नैतिकता से आक्रांत थी। छायावाद युग में इसके प्रति व्यापक विद्रोह हुआ। छायावादी कवियों ने स्वच्छंद जीवन और स्वच्छंद प्रेम की व्यापक अभिव्यक्ति की है।

वैयक्तिकताः–

वैयक्तिकता छायावाद की प्रमुख विशेषता है। छायावादी कवियों ने एक ओर जहाँ चराचर को अपने वैयक्तिक चिंतन , कल्पना और विचारों के अधार पर प्रकट करना शुरू किया, वही दूसरी ओर उसने अपने वैयक्तिक सुख–दुःख, आशा–निराशा, लाभ–हानि आदि वैयक्तिक भावनाओं को भी व्यक्त किया। छायावाद की सभी कवियों में यही प्रवृति मिलति है। निराला ने लिखा हैः–

''मैने मैं शैली अपनाई
देखा एक दुःखी निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में
अरे, उमड़ वेदना आई।''

सौंदर्य चित्रणः–

छायावाद में सूक्ष्म सौंदर्य का चित्रण व्यापक रूप में हुआ है। छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में अमूर्त्त अशरीरी सौंदर्य को व्यक्त किया है। प्रकृति और नारी से लेकर आत्मिक सौंदर्य बोध तक को इस काव्य में महत्व मिला है। नारी का सूक्ष्म सौंदर्य कहीं प्रकृति के रमणिक दृश्यों के माध्यम से प्रकट हुआ है, तो कहीं सूक्ष्म प्रतिकात्मक रूप से । नारी का पवित्र और श्रद्धा भरित रूप हीं अधिक चित्रित हुआ है। पुरूष सौंदर्य भी सजीव और चित्ताकर्षक रूप में प्रकट हुआ है। प्रसाद की सौंदर्य भावना का एक चित्र द्रष्टव्य है–

''नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखिला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग।''

प्रेम की व्यापकताः–

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रेम को एक व्यापक आयाम दिया है। इसके अन्तर्गत प्रकृति प्रेम, नारी प्रेम, मानव प्रेम, शिशु प्रेम एवं अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम आदि अनेक मुखी प्रेम की व्यंजना हुई है। छायावादी कवियों ने रीतिकाल के ग्रहित प्रेम को न ग्रहण कर मधुर निश्च्छल और पवित्र रूप को स्वीकार किया है। अज्ञात सत्ता के प्रति महादेवी वर्मा का प्रेम द्रष्टव्य है–

''मैं कण–कण में ढ़ाल रही हूँ आँसू के मिस प्यार किसी का।
मैं पलकों में पाल रहीं हूँ यह सपना सुकुमार किसी का।''

प्रकृति–चित्रण में नवीनताः–

प्रकृति छायावादी कवियों की अभिन्न अन्तरंग संगिनी है। छायावाद की सौंदर्यानुभूति विराट प्रकृति के अणु–अणु में परिव्याप्त है। विधाता ने सौंदर्य की अभिव्यक्ति या तो प्रकृति में की है या नारी में। छायावाद में नारी प्रकृतिमय है और प्रकृति नारीमय । निराला की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

''दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रहीं हैं
वह संध्या सुन्दरी परी–सी
धीरे–धीरे–धीरे।''

श्रृगार भावनाः–

छायावादी कवियों की श्रृंगार भावना सूक्ष्म एवं संयत है। छायावादी कवियों ने रीतिकालीन स्थूल ऐन्द्रियता और द्विवेदीयुगीन शुष्क नैतिकता एवं बौद्विकता के प्रति विद्रोह किया है। प्रसाद की विलक्षण एवं मर्यादित श्रृंगार भावना की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में द्रष्टव्य हैः–

''सिंधु–सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी–सी।
प्रलय –निशा की हलचल स्मृति में मान किए–सी ऐंठी सी।''

भावाभिव्यक्तिः–

छायावादी कवियों ने घटनाओं की अपेक्षा भावों के वर्णन में अधिक रूची दिखाई है। काव्य के सभी रूपों में उन्होंने भावों के वर्णन को प्राथमिकता दी है। इस दृष्टि से लज्जा का वर्णन द्रष्टव्य है–

''चंचल किशोर सुन्दरता की, मै करती रहती रखवाली।
मै वह हल्की सी मसलन हूँ, जो बनती कानों की बाली।।''

नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोणः–

छायावादी कवियें ने युग–युग से लांछित, शोषित और उपेक्षिता नारियों के प्रति नवीन दृष्टिाकोण का सूत्रपात किया। उन्होंने नारी को महिमा के सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठापित किया है। पंत ने स्पष्ट कहा है–'योनि नहीं है रे नारी मानवी प्रतिष्ठित।' जयशंकर प्रसाद ने लिखा हैः–

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।''

मनवतावादः–

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में मानवतावाद का प्यापक प्रचार–प्रसार किया जो अरविन्द घोष और रविन्द्रनाथ टैगोर की मानवतावादी दृष्टि से प्रभावित है। थोथी नैतिकता और जर्जरित परम्परा के प्रति विद्रोह भाव व्यक्त किया है। पंत जी ने स्पष्ट लिखा हैः–

''द्रुत झरो, जगत् के जीर्ण पत्र , हे त्रस्त ध्वस्त हे शुष्क शीर्ण।
हिमताप पीत मधुबात भीत तुम बीतराग जग पुराचीन।''

रहस्य–भावनाः–

रहस्य भावना छायावाद की एक अन्यतम विशेषता है। महादेवी वर्मा के अनुसार विश्व अथवा प्रकृति के सभी उपकरणों में चेतना का आरोप छायावाद की पहली सीढ़ी है, तो किसी असीम सत्ता के प्रति अनुरागजनित आत्म विसर्जन का भाव अथवा रहस्यवाद छायावाद की दूसरी सीढ़ी है। छायावाद चतुष्ठ प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी में रहस्य– भावना की व्यापक अभिव्यक्ति मिलती है। कामायनी में जिज्ञासु मनु कहता है–

''महानील इस परमव्योंम में अंतरिक्ष में ज्योर्तिमान।
ग्रह , नक्षत्र और विद्युत कण किसका करते है संधान।''

इसके अतिरिक्त छायावादी कवियों ने दुःखवाद, राष्ट्रीयता, देशप्रेम, वेदना, निराशा का भी वर्णन अपने काव्य में किया है।

छायावाद की कलागत विशेषताएँः–

लाक्षणिकताः–

लाक्षणिक शब्दों के प्रयोग के कारण छायावादी कविताओं के प्रभावोत्पादकता में व्यापक वृद्धि हुई है। इस दृष्टि से पंत जी की यह पंक्ति द्रष्टव्य हैः–

''देख वसुधा का यौवन भार,
गुँज उठता है जब मधुमास।''

संगीतात्मकताः–

छायावादी कविताओं में शब्द चयन की सतर्कता के कारण शब्दों की बाह्य एवं आंतरिक संगीतात्मकता सहज हीं प्रकट हो गई है। छायावाद की कवियों प्रसाद, पंत और महादेवी वर्मा की रचनाओं में संगीतात्मकता तो है हीं विशेषकर संगीत शास्त्रज्ञ कवि निराला की रचनाओं में संगीतात्मक तत्व विशेष रूप से विद्यमान हैः–

''धँसता दल–दल
हँसता नद खल–खल
बहता कहता कुल–कुल कल–कल।''

नवीन प्रतीक योजनाः–

छायावादी कवियों ने सूक्ष्म भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए सूक्ष्म प्रतीकों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। पंत जी ने आशा, प्रेम, सुख और दुःख के लिए क्रमशः कलि, किसलय, कुसुम और शूल आदि प्रतीकों का प्रयोग किया हैः–

''जग के छवि उपवन के अकूल,
इसमें कलि, किसलय, कुसुम शूल।''

चित्रात्मकताः–

चित्रात्मक भाषा का प्रयोग कर छायावादी कवियों ने क्लिष्ट और दुरूह भावों की विलक्षण व्यंजना की है। पंत ने इन पंक्तियों में चित्रात्मकता का विलक्षण प्रयोग किया हैः–

''अहे वासुकि सहस्त्र फन!
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्ष स्थल पर
शत–शत फेनोच्छवासित स्फीत भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अंबर।''

नवीन अलंकार योजनाः–

छायावादी कवियों ने परम्परागत अलंकारों का सफल प्रयोग तो किया हीं है, तीन नए अलंकारों–मानवीकरण, ध्वन्यर्थ व्यंजना और विशेषण–विपर्यय का भी विशद् प्रयोग किया है। पंत जी की इन पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार की छटा द्रष्टव्य हैः–

''माँ के उर पर शिशु सा समीप
सोया धरा में एक द्वीप।''

मुक्तक छन्दों का प्रयोगः–

छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में मुक्तक छन्द का खुलकर प्रयोग किया है। निराला ने स्पष्टतः लिखा है–मनुष्यों की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मो की बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दो के शासन से अलग हो जाने में है।

निष्कर्षः–

स्वानुभूति, कल्पना, प्रकृति का मानवीकारण, लाक्षणिक वैचित्रय, मूर्त प्रत्यक्षीकरण तथा अध्यात्मिक छाया आदि विशेषताओं से सम्पन्न छायावादी काव्य में व्यक्ति की स्वाधीनता की भावना से उत्पन्न सौन्दर्य को हीं सम्पूर्ण समाज के स्वाधिनता–सौन्दर्य की अभिव्यक्ति बनाकर प्रस्तुत किया गया है। वस्तुओं को असधारण दृष्टि से देखने वाले छायावादी कवि की दृष्टि में उन्मादकता के साथ–साथ अंतरंगता का संस्पर्श भी रहा है। इतना हीं नही कुछ समय बाद छायावाद के लिए 'रोमैण्टिसिज्म' शब्द का प्रयोग भी किया गया।

अतः छायावाद विदेशी पराधीनता और स्वदेशी जीर्ण–शीर्ण रूढ़ियों से मुक्त होने के मुक प्रयासों का मुखर स्वर है इसमें राष्ट्रीय जागरण की चेतना प्रधान है। छायावाद का केवल 18 वर्ष की आयु मे भले हीं अंत हो गया हो पर इसने हिन्दी काव्य को जो नवसुरभित पुष्प, जीवन सौदर्य और नया मानवीय दृष्टिकोण दिया है, वह उसे आधुनिक काल का स्वर्ण युग सिद्ध करने के लिए प्रर्याप्त है। छायावादी काव्य आंदोलन हिन्दी काव्य की एक अन्यतम उपलब्धि है। आधुनिक हिन्दी काव्य आंदोलन में यही एक आदोलन है जिसे मौलिक काव्य आन्दोलन कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1.डॉ लाल चन्द्र गुप्त –'हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–191
2.डॉ पवन कुमार यादव–'हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ–133
3. डॉ0 नागेन्द्र व डॉ0 हरदयाल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' 69वाँ संस्करण, 2019 मयूर बुक्स, नई दिल्ली–110002
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशकः नागरी प्रचारिणी सभा काशी
5. डॉ0 आशोक तिवारी ''हिन्दी'', पृष्ठ–150, प्रकाशकः साहित्य भवन, आगरा
6.वही पृष्ठ –152
7.वही पृष्ठ –153
8.अचार्य नन्द दूलारे वाजपेयी, 'हिन्दी साहित्य 20वी शताब्दी'

9.सुमित्रानंदन पंत 'छायावाद पूनर्मूल्याकण'

10.सूर्य प्रकाश दीक्षित 'छायावादी कवियों का सौदर्य विधान'

11.डॉ कृष्ण चन्द्र वर्मा, 'छायावादी काव्य' प्रकाशक–मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी

12.शम्भू नाथ सिंह, 'छायावाद युग' प्रकाशकः सरस्वती मंदिर–वाराणसी(1962)

13.शिव कुमार शर्मा, 'हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृतियाँ' प्रकाशकः अशोक प्रकाशन–नई दिल्ली

Umashankar Ray.
M.A HINDI (UGC NET&JRF)
Department of HINDI.
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
Email id: usraystudent@gmail.com
Mob no.: 7654762067